पेज थ्री देहरादून

पहाड़ी जिलो में बारिश के साथ पड़े ओले।

देहरादून, रविवार, 8 मई 2022

पेज 8

हमारा दून

संक्षिप्त समाचार

पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता से गर्मी बढ़ने के आसार

संवाददाता देहरादून। राजधानी दून समेत मैदानी इलाकों में एक बार फिर गर्मी बढ़ने के आसार हैं। पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता के कम सक्रिय होने और बंगाल की खाड़ी से आ रही नम हवाओं के दबाव के कमजोर पड़ने के साथ ही फिर पारा चढ़ने की उम्मीद है। मौसम विभाग के मुताबिक, राजधानी दून व आसपास के इलाकों में आगामी दिनों में अधिकतम तापमान जहां 36 डिग्री के आसपास रहने की उम्मीद है, वहीं न्यूनतम पारा भी 24 का आंकड़ा छू सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 24 घंटों में उत्तरकाशी, चमोली, पिथौरागढ़ जैसे जिले के ऊंचाई वाले स्थानों में कहीं–कहीं बहुत हल्की बूंदाबांदी की संभावना है।

बदरीनाथ और सोनप्रयाग का किराया प्रति यात्री दुगुना

संवाददाता ऋषिकेश। उत्तराखंड परिवहन निगम ऋषिकेश डिपो ने बदरीनाथ और सोनप्रयाग (केदारनाथ) का किराया प्रति यात्री दुगुना कर दिया है। यात्रा के लिए प्रतिदिन 20 बस लगाई गई है। रविवार तक 50 और बस यहां पहुंच जाएंगी। इन दोनों रूट पर वापसी में सवारी ना मिलने के कारण होने वाले घाटे की भरपाई के लिए परिवहन निगम ने किराया वृद्धि का रास्ता चुना है। चारधाम यात्रा को देखते हुए उत्तराखंड परिवहन निगम ऋषिकेश डिपो की ओर से एक मई से बदरीनाथ और सोनप्रयाग के लिए सामान्य सेवा शुरू की गई थी।

नैनीताल सहित पहाड़ी जिलो में बारिश के साथ पड़े ओले

संवाददाता देहरादून। उत्तराखंड के कुमाऊं शनिवार शाम को दोपहर बाद अचानक से बादल छा गए और कुछ देर बाद झमाझम बारिश होने लगी। भीमताल में बारिश के साथ काफी ओलावृष्टि हुई है। वहीं अल्मोड़ा, बागेश्वर व पिथौरागढ़ में हल्की बारिश हुई है। इसके अलावा हल्द्वानी व ऊधमसिंह नगर में बादल छाए रहे साथ ही हल्की हवाएं चलीं पर बारिश नहीं हुई। पर पहाड़ पर बारिश व ओले का असर यह रहा कि मैदानी इलाके में गर्मी से राहत जरूर मिली।

पहाड़ पर महंगाई की मार, अब सामान पहुंचाना होगा महंगा

संवाददाता देहरादून। पहाड़ सामान पहुंचाना महंगा होने जा रहा है। ट्रांसपोर्टरों ने सामान ढुलाई का भाड़ा 16 प्रतिशत तक बढ़ा दिया है। कुमाऊं ट्रांसपोर्ट यूनियन संयुक्त मोर्चा व देवभूमि उद्योग व्यापार मंडल की सामूहिक बैठक में भाड़ा बढ़ाने का निर्णय लिया गया। नई दरों के मुताबिक अल्मोड़ा, रानीखेत सामान पहुंचाना 10 रुपये तक महंगा होगा तो मुनस्यारी, धारचूला के लिए 30 रुपये अधिक चुकाने होंगे। इस पर पांच प्रतिशत वस्तु एवं सेवा कर यानी जीएसटी अलग से देना होगा। नई दरें 10 मई से लागू होंगी।

केदारनाथ के क्षेत्रपाल बाबा भैरवनाथ के कपाट खुले

आस्था

■ धाम में बाबा केदारनाथ की सायंकालीन आरती भी विधिवत हुई

■ श्रद्धालुओं ने आराध्य के दर्शन कर सुख–समृद्धि का आशीर्वाद मांगा

संवाददाता

देहरादून। भगवान केदारनाथ के क्षेत्रपाल के रूप में पूजनीय भगवान भैरवनाथ के कपाट विधि–विधान के साथ खोल दिए गए हैं। आराध्य ने अपने पश्वा पर अवतरित होकर भक्तों को सुख–समृद्धि का आशीर्वाद भी दिया। भगवान भैरवनाथ मंदिर के कपाट खुलने के साथ ही धाम में बाबा केदार की सायंकालीन आरती भी शुरू हो गई है।

शनिवार को परंपरानुसार पूर्वान्ह 11.30 बजे केदारनाथ के मुख्य पुजारी गंगाधर लिंग ने भैरवनाथ मंदिर के कपाट खोले। इसके उपरांत भगवान भैरवनाथ की छह माह की पूजा के संकल्प के साथ ध्यान किया गया। साथ ही आराध्य का रुद्राभिषेक, तेलाभिषेक और श्रृंगार के उपरांत निर्विघ्न केदारनाथ यात्रा और सुख–समृद्धि के लिए हवन किया गया।

इसके उपरांत आराध्य भैरवनाथ को भोग लगाया गया और आरती उतारी गई। इस मौके पर बाबा केदार के दर्शनों को धाम पहुंचे कई श्रद्धालुओं ने आराध्य के दर्शन कर सुख–समृद्धि का आशीर्वाद मांगा। सभी धार्मिक परंपराओं के निर्वहन के उपरांत भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। परंपरानुसार भगवान भैरवनाथ मंदिर के कपाट खुलने के साथ ही भगवान केदारनाथ की सायंकालीन की आरती भी शुरू हो गई।

इस मौके पर वेदपाठी स्वयंभर सेमवाल, मृत्युंजय हीरेमठ, पश्वा अरविंद शुक्ला, पंतेर शिव प्रसाद, डोली प्रभारी प्रदीप सेमवाल, पुष्कर सिंह रावत, उमेद भंडारी सहित अन्य लोग मौजूद थे।

परंपरानुसार केदारनाथ मंदिर के कपाट खुलने के बाद पहले मंगलवार या शनिवार को भैरवनाथ मंदिर की पूजा शुरू होती है और तभी से बाबा केदार की सायंकालीन आरती भी शुरू हो जाती है। भगवान भैरवान के कपाट खुलने के दौरान सैकड़ों श्रद्धालुओं यहां मौजूद रहे।

छह माह तक मंदिर में नित्य जलता रहता है दीपक

हर साल भैया दूज पर केदारनाथ धाम के कपाट छह माह के लिए बंद हो जाते हैं। इस दौरान मंदिर और उसके आसपास कोई नहीं रहता है, लेकिन कहते हैं कि शीतकाल के लिए कपाट बंद होने पर छह माह तक मंदिर में दीपक नित्य जलता रहता है।

पुराणों के अनुसार केदार श्रृंग पर भगवान विष्णु के अवतार नर और नारायण ऋषि ने तपस्या की थी। उनकी तपस्य्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उनकी प्रार्थनानुसार सदा ज्योतिर्लिंग के रूप में वास करने का वर प्रदान किया था। यह स्थल केदारनाथ पर्वतराज हिमालय के केदार नामक श्रृंग पर स्थित है। केदारनाथ धाम के बारे में एक कथा यह भी प्रचलित है। जिसके अनुसार पांडवों की भक्ति के प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें भ्रातृहत्या से मुक्त कर दिया था।

आर्मी बैंड की धुन पर बदरीनाथ धाम पहुंची देव डोलियां

प्रस्थान

■ गरुड़ में बैठकर अपने धाम के लिए रवाना हुए भगवान बदरीनाथ, आज खुलेंगे कपाट

संवाददाता

देहरादून। नृसिंह मंदिर में वैदिक पूजा–अर्चना संपन्न होने के बाद आदि गुरु शंकराचार्य की गद्दी और बदरीनाथ के रावल (मुख्य पुजारी) ईश्वर प्रसाद नंबूदरी योग ध्यान बदरी मंदिर पांडुकेश्वर के लिए रवाना हो गए हैं। शाम करीब चार बजे वे रात्रि प्रवास के लिए पांडुकेश्वर पहुंचे।

शनिवार को रावल के साथ देव डोलियों ने बदरीनाथ धाम के लिए प्रस्थान किया। इसके साथ ही गाडू घड़ा तेल कलश यात्रा भी बदरीनाथ धाम के लिए रवाना हो गई है। आठ मई को सुबह ब्रह्म मुहूर्त में 6:15 बजे बदरीनाथ धाम के कपाट खोल दिए जाएंगे। शुक्रवार को जोशीमठ नृसिंह मंदिर में वैदिक पूजाएं संपन्न होने के बाद आदि गुरु शंकराचार्य की गद्दी, रावल ईश्वर प्रसाद नंबूदरी, धर्माधिकारी भुवन चंद्र उनियाल के साथ ही श्री बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति के वेदपाठी आचार्य ब्राह्मण व अधिकारीगण योग ध्यान बदरी मंदिर पांडुकेश्वर के लिए रवाना हुए।

नृसिंह मंदिर में इस दौरान स्थानीय महिलाओं ने मांगल गीत गाए और यात्रा को विदा किया। इस दौरान जय बदरीनाथ के जयघोष से भगवान नृसिंह की नगरी जोशीमठ गुंजायमान हो उठी। बीकेटीसी के उपाध्यक्ष किशोर पंवार ने कहा कि धाम में तीर्थयात्रियों को कोई असुविधा नहीं होने दी जाएगी।

रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती पर भावभीनी श्रद्धांजलि

संवाददाता ऋषिकेश। प्रसिद्ध बांग्ला कवि, कहानीकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबंधकार, चित्रकार तथा भारतीय संस्कृति के पुरोधा श्री रवींद्रनाथ टैगोर जी को उनकी जयंती पर भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित करते हुये स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी ने कहा कि रवींद्रनाथ जी ने बंगाली साहित्य एवं संगीत के साथ–साथ 19 वीं सदी के अंत एवं 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में भारतीय कला और साहित्य के पुनरुत्थान में अभूतपूर्व योगदान दिया।

रविंद्र नाथ टैगोर ने न केवल भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ रूप से पश्चिमी देशों का परिचय बल्कि पश्चिमी देशों की संस्कृति की श्रेष्ठताओं को भी स्वीकार किया। वह दुनिया के एकमात्र अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाएं दो देशों का राष्ट्रगान बनी–भारत का राष्ट्र–गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बाँग्ला'। नोबल पुरस्कार से सम्मानित श्री रवींद्रनाथ टैगोर जी की काव्यरचना गीतांजलि भारत के लिये एक वरदान है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक
प्रदीप चौधरी
द्वारा
एल.के प्रिंटर्स,74/9,आराघर,देहरादून
से मुद्रित
व जाखन जोहड़ी रोड,
पी.ओ–राजपुर, देहरादून से प्रकाशित।
संपादकः प्रदीप चौधरी

सिटी कार्यालयः
शिवम् मार्केट, द्वितीय तल
दर्शनलाल चौक, देहरादून।

(M) 9319700701
pagethreedaily@gmail.com
आर.एन.आई.नं0
UTTHIN\2005\15735
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून
ही मान्य होगा।